।। श्री गणेशाय नमः ।।
।। श्री महालक्ष्म्यै नमः ।।
नमस्तेऽस्तु महामाये श्री पीठे सुर पूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ।।

।।तमसो मा ज्योतिर्गमय।।

राजश्री ज्योतिष कार्यालय
पं. भानुप्रकाश दवे पुत्र श्री गिरीजाशंकरजी
शिव गली, पुरा मोहल्ला जालोर–343001 (राज.)
9413465021
7023725554

कज्जली तीज विशेषांक

22 तारीख कजली तीज पर बन रहा है सौभाग्यवती योग'

भाद्रपद कृष्ण पक्ष तृतीया गुरुवार दिनांक– 22.08.2024 को कज्जली तीज (काजल तीज) एवं संकट चतुर्थी व्रत मनाया जायेगा। दोनों एक साथ होने से यह व्रत विशेष { 'सौभाग्यवती योग' } बनाता है। चंद्र दर्शन इस समय रात्रि 9.03 बजे से रहेगा। भारत के सभी वैदिक विद्वानों ने एकमत से यह निर्णय लिया है जिन पंचांगों में गलती से मानवीय भूलवश दिनांक 21 अगस्त 2024 को कज्जली तीज लिखा है उसे स्वीकार न करते हुए, त्रुटि को सुधारते हुए बिना किसी भ्रम में आयें 22 अगस्त 2024 को ही कज्जली तीज व्रत शास्त्रीय सम्मत माना जायेगा।

शंका समाधान प्रश्नोत्तरी के माध्यम से

प्रश्न–1. 21 अगस्त 2024 को कज्जली तीज व्रत नहीं मनाने का शास्त्रीय पक्ष क्या है?

उत्तर– **'द्वितीया योगे प्रत्यवाय माहस एव द्वितीया शेष संयुक्तां या करोति विमोहिता ।' 'सावैधव्य मवाप्नोति प्रवदंति मनीषिण इति ।'**

अर्थात् द्वितीया के शेष योग से युक्त तृतीया को विमोहित होकर(अहंकार)से व्रत करती है, उसे वैधव्य की प्राप्ति होती हैं। इसीलिए वैदिक विद्वानों ने 21 तारीख को कज्जली तीज व्रत निषेध किया है।

प्रश्न–2. 22 तारीख को व्रत मनाने का शास्त्रीय कारण क्या है?
उत्तर– निर्णय सिंधु ग्रंथ के अनुसार–

पहला प्रमाण

मुहूर्त मात्र सत्त्वेपि दिने गौरि व्रतं परे। शुद्धाधि काया मप्येवं गण योग प्रशंसनादि माध वोक्तेः।' अर्थात् यदि मुहूर्त मात्र हो तो भी गौरी के व्रत में तृतीया अगली ही ली जाती हैं क्योंकि यदि शुद्धा भी अधिक हो तो भी उसमें चतुर्थी(गण) का योग प्रशंसित माना गया है।

दूसरा प्रमाण

चतुर्थी युक्तायां फलाधिक्यं माधवीये आपस्तंबः चतुर्थी सहिता यातु सा तृतीया फलप्रदा ।अवैधव्यकरास्त्रीणां पुत्र पौत्र प्रवर्धिनी।।' अर्थात् चतुर्थी के योग में फल भी अधिक होता है। यह बात माधव के ग्रंथ आपस्तंब में कहा गया है कि चतुर्थी युक्त तृतीया विशेष फल देने वाली स्त्रियों के वैधव्य योग को मिटाने वाली और पुत्र–पौत्र की वृद्धि करने वाली, इसीलिए वैदिक विद्वानों ने 22 तारीख को ही कज्जली व्रत स्वीकार किया है।

प्रश्न–3. 22 तारीख को रात्रि में चतुर्थी का चन्द्रमा है क्या दर्शन, पूजन कर सकते हैं, भ्रम दूर करें?
उत्तर– कुछ लोगों ने यह भ्रम फैलाया है कि भादों का चन्द्रमा नहीं देखना चाहिए परन्तु कौनसा, आइये शास्त्रीय पक्ष को जाने–

'भाद्रशुक्लचतुर्थ्यायोज्ञानतोऽज्ञानतोऽपिवा। अभिशापिभवेच्चन्द्रदर्शनाभ्दृशदुःखभाग् ॥

इस श्लोक से यह स्पष्ट हो जाता है कि भाद्रपद शुक्ल पक्ष के चतुर्थी के चंद्रमा का दर्शन निषेध किया गया है न कि कृष्ण पक्ष का। इससे यह भ्रम जो फैलाया गया है वह दूर हो जाता है क्योंकि 22 अगस्त 2024 रात्रि को भाद्रपद कृष्ण पक्ष चतुर्थी (संकट चतुर्थी)के चंद्रमा का दर्शन, पूजन–अर्घ करने से सारे संकट दूर हो जाते हैं।

प्रश्न–4. क्या रात्रि में चतुर्थी युक्त कज्जली तीज होने पर व्रत मना सकते हैं?
उत्तर– 'आद्यामधु श्रावणिका कज्जली हरि तालिका ।चतुर्थी मिश्रिता स्त्रीभिर्दिवा नक्तेविधीयते।।'

अर्थात्

भाद्रपद कृष्ण पक्ष तृतीया को मधुश्रावणिका कज्जली (काजल) तीज और शुक्ल पक्ष में हरि तालिका स्त्रियों को वह करनी चाहिए जो दिन अथवा रात्रि में चतुर्थी युक्त है,इससे स्पष्ट हो जाता है कि कज्जली तीज व्रत में रात्रि के समय चतुर्थी के चंद्रमा युक्त होने पर पूजन–अर्घ्य दिया जा सकता है।

प्रश्न–5. कुछ लोग **जयसिंह कल्पद्रुम** के आधार पर स्पष्टीकरण दे रहे है कि कज्जली तीज 21 तारीख को मनाये कृपया भ्रांति दूर करें?

उत्तर– कुतर्क का निराकरण यह है कि जयसिंह कल्पद्रुम में जो बात लिखी गईं हैं वह **काशी खण्ड** में भगवान काशी विश्वनाथ के समय पर स्थित **विशालाक्षी देवी** के जागरण के लिये कहा गया है कि वहां पर भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया को रात्रि जागरण होकर व्रत होता है।यह **मंदिर मीरघाट** पर स्थित है। इसका सम्बन्ध हमारे यहां कज्जली तीज व्रत से नहीं है यह संयोग मात्र से है। संस्कृत और संस्कृति को नहीं जानने वाले लोग जयसिंह कल्पद्रुम के काशी खण्ड के श्लोक के अर्थ का अनर्थ कर प्रस्तुत कर रहे हैं इनसे सावधान रहें।

निवेदन– कुतर्क करके मनमाना आचरण करने वालों से निवेदन है कि अपने ऊपर कृपा करके शास्त्र अनुसार चले क्योंकि **'मतरो यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति वानरा। शास्त्राणी यत्र गच्छन्ति तत्र गच्छन्ति तेनरा।।** अर्थात् मन माने तरीके से चलने वालों को बन्दर कहा जाता है व शास्त्र के अनुसार चलने वाले को मनुष्य कहा जाता हैं।

ज्योतिषाचार्य पंडित भानु प्रकाश दवे
पता– पुरा मौहल्ला, जालौर राजस्थान
मो. 7023725554